International Journal of Applied Research 2017; 3(5): 716-718

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(5): 716-718
www.allresearchjournal.com
Received: 11-03-2017
Accepted: 12-04-2017

प्रेम वल्लभ देवली
शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली-110007

Correspondence
प्रेम वल्लभ देवली
शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली-110007

भारतीय दर्शन तथा महर्षि अरविन्द की दृष्टि

प्रेम वल्लभ देवली

प्रस्तावना

भारतीय दार्शनिक परम्परा अत्यन्त व्यापक है उल्लेखनीय है कि तीन नास्तिक दर्शनों के अतिरिक्त छः आस्तिक दर्शनों में भी विभिन्न विषयों में पर्याप्त मतभेद रहे हैं। अतः इस सन्दर्भ में महर्षि अरविन्द का मन्तव्य उल्लेखनीय है।

भारतीय दार्शनिकों की सदा से यह विशेषता रही है कि उनमें तर्कदृष्टि तत्त्वदृष्टि का साधन रही है और उनका जीवन-सिद्धान्त उनके जीवन-मार्ग को आलोकित करता रहा है। यह जीवन-सिद्धान्त भी उनके जीवन की गहनतम अनुभूतियों और सूक्ष्मतम चिन्तन पर ही आधारित होता है। यही कारण है कि भारतीय दर्शन नीरस, शुष्क एवं तथ्यहीन विचार मात्र या अनुभूतियों का संकलन मात्र न होकर, जीवन के दिव्यतम स्वरूप को उद्घाटित करता हुआ, उसकी ओर प्रशस्त होने का मार्ग व्यक्त करता है। श्रीअरविन्द के दर्शन में दिव्य जीवन का अनावरण तो मिलता ही है, उसकी सिद्धि का सर्वश्रेष्ठ पथ भी मिलता है जिसे उन्होंने सर्वांगयोग नाम से अभिहित किया है। श्री अरविन्द के दर्शन के प्रेरणा स्रोत एवं प्रकाश स्तम्भ वेद, उपनिषद और पुराण हैं जिन्हें उन्होंने अपनी अनुभूति, साधना, अद्वितीय प्रतिभा और अतिमानसिक दृष्टि के रूप तथा अंतर्तथ्य से युक्त किया है। श्री अरविन्द दर्शन सिद्धान्त मात्र न रहकर व्यवहार योग्य भी है। यह इस बात से प्रमाणित होता है कि अरविन्द-आश्रम, पांडीचेरी में अनेक साधकगण इस मार्ग का अनुसरण करते हुए अपने को दिव्यत्व में विकसित अनुभव करते रहे हैं। [1]

भारतीय विचारधारा को स्वयं के दर्शन का आधार मानकर चलने वाले श्री अरविन्द ने यत्र-तत्र पाश्चात्य विचारों का समावेश कर अपने दर्शन को पाश्चात्य ज्ञान की पुष्टि दी है। भारतीय दार्शनिक सम्प्रदायों में वे वेदान्त, सांख्य, योग एवं तन्त्र से अत्यधिक प्रभावित थे। अन्य भारतीय दर्शनों का अत्यल्प प्रभाव उन पर दिखाई देता है। श्रीअरविन्द का दर्शन यौगिक अनुभव का बौद्धिक विश्लेषण है। अरविन्द दर्शन में सभी विचार धाराओं का अपूर्व सामञ्जस्य दृष्टिगोचर होता है।

श्री अरविन्द आधुनिक युग के उपनिषदों के द्रष्टा के अवतार हैं परन्तु शंकर एवं रामानुज के समान भाष्यकार नहीं, अपनी स्वतन्त्र साधना के बल पर यदि वे उपनिषदों के सत्यों पर ही पहुँचे तो यह दर्शन की देशकाल अतीतता का एक प्रमाण ही है। यद्यपि अपने 'विश्वरूप दर्शन' में वे उपनिषदों से बहुत आगे बढ़ गये हैं। वे दर्शन की पूर्वीय एवं पाश्चात्य गंगा-जमुना के पवित्र संगम, तन-मन-प्राण सभी को दैवी सत्ता के अवरोहण का माध्यम बना देने वाले एक योगी, पृथ्वी पर ईसा के 'स्वर्गराज्य' की कल्पना को मूर्तिमान बनाने का आयोजन करने वाले युगप्रवर्तक नेता और थोथी संस्कृति तथा कृत्रिम सभ्यता के भार से लड़खड़ाती हुई मानव जाति को अतिमानस के विज्ञानमय लोक की ओर ले जाने वाले एक महान् पथ प्रदर्शक हैं। स्वतन्त्र मौलिक अनुभूति पर आधारित होने पर भी उनका दर्शन अनायास ही पूर्व और पश्चिम के सभी दर्शनों का एक समुच्चय बन पड़ा है, क्योंकि एक सम्पूर्ण आध्यात्मिक अनुभव किसी भी एकांगी अनुभव को बहिष्कृत नहीं करता बल्कि अपने सर्वग्राही दृष्टि क्षेत्र में सभी को उपयुक्त स्थान प्रदान करता है। अतः श्री अरविन्द का महान् ग्रन्थ "लाइफ डिवाइन" कोई सर्वदर्शन-सार-संग्रह नहीं बल्कि सच्चिदानन्द सत्ता के रहस्य के साक्षात्कार का मानव-सुलभ भाषा में वर्णन है।

श्री अरविन्द की प्रणाली पूर्ण योग पर आधारित है। एक सम्पूर्ण अनुभव की प्रणाली और उसकी बौद्धिक व्याख्या के लिए तदनुकूल तर्कशास्त्र, ये दोनों ही दर्शन के अनिवार्य अंग है। क्योंकि दर्शन में स्थान पाने के लिए पहली शर्त अनुभव की तर्कपूर्ण व्याख्या है। अत: श्री अरविन्द कोरे रहस्यवादी अथवा द्रष्टा नहीं बल्कि शंकर और ब्रैडले के जोड़ के तार्किक और काँट तथा हैगल के समान बुद्धिवादी हैं। उनका दर्शन पूर्ण अनुभव और अदम्य बुद्धि का अनुपम सामंजस्य है। [2]

श्री अरविन्द के अनुसार गीता में विभिन्न दर्शनों को समन्वित करने का अद्‌भुत प्रयास किया गया है। गीता में जहाँ एक ओर सांख्य दर्शन को कर्मयोग से समन्वित कर निवृत्ति के मार्ग को अवरुद्ध किया है, वहीं दूसरी ओर उसमें वैदिक सत्य एवं अनुभूतियों का समन्वय कर ऊर्ध्व जगत् का सोपान भी बना दिया है। सांख्य जहाँ त्रिगुणात्मक प्रकृति के विश्लेषण तक सीमित है। वहीं गीता त्रिगुणात्मक प्रकृति का (जो चेतना का अधोलोक है) सम्बन्ध चेतना के ऊर्ध्वलोक अर्थात् त्रिगुणातीत ब्रह्म से करती है। जो कि वेदान्त की विषयवस्तु है। महर्षि अरविन्द के अनुसार गीता वेद का एक भाष्य है, जिसमें वेद की मूल भावना अभिव्यक्त हुई है।

गीता, योग दर्शन का भी सांख्य की तरह बृहदीकरण करती है। पातञ्जल योगानुसार प्रकृति के व्यापार से ऊपर उठने पर ही समाधि या कैवल्य पद की प्राप्ति होती है। पातञ्जल योग साधना का प्रमुख लक्ष्य प्रकृति और पुरुष का विच्छेद है। प्रकृति के माध्यम से आत्मा को मोक्ष मिलता है। चित्त की चञ्चलता को यम-नियमादि अष्टाङ्ग प्रक्रिया से नियन्त्रित किया जाता है। महर्षि अरविन्द के अनुसार गीता का योग राजयोग से अधिक व्यापक और परिष्कृत है। आत्मा [3] के क्रमिक विकास द्वारा त्रिगुणात्मक प्रकृति से ऊपर उठकर दिव्य चेतना की उपलब्धि ही उसका लक्ष्य है। गीता का योग उन समस्त आध्यात्मिक प्रक्रियाओं का समन्वय है जिसके द्वारा दिव्य चेतना के उत्कृष्टतम रूप की सिद्धि होती है। गीता को पूर्ण जीवन-दर्शन मानने का मुख्य कारण यही है।

श्रीअरविन्द के अनुसार गीता के योग में कोई भी नियमबद्ध और शास्त्रीय श्रेणी विभाग का विधान नहीं है, गीता का योग आत्मविकास की सामान्य प्रक्रिया है, वे कहते हैंμ निरे कर्म की अपेक्षा बुद्धियोग अधिक श्रेष्ठ है। बुद्धियोग के द्वारा मनुष्य अपने असंस्कृत प्राकृत मनμबुद्धि और उसकी कामनाओं से ऊपर उठकर सर्वकामरहित ब्राह्मी स्थिति की पवित्रता और समता को प्राप्त होता है, तभी वह उन कर्मों को कर सकता है जो भगवान के द्वारा स्वीकार्य हैं। वे कहते हैंμ ईश्वरवाद, बहुदेववाद और अद्वैतवाद इन सभी सिद्धान्तों की स्वीकृति और सूक्ष्म समन्वय गीता दिखाई देता है। गीता चाहती है कि मानव, अन्दर की सन्तुलित अवस्था द्वारा और कर्म के कुछ सिद्धान्तों के अवलम्बन द्वारा जीवन का पुनरूद्धार करे, निम्न प्रकृति से दिव्य प्रकृति में कोई परिवर्तन, आरोहण या नवजन्म लाये।

गीता में समाहित वेदांत एवं तन्त्र के समन्वय को महर्षि अरविन्द ने स्पष्ट रूप से उभारा है। उन्होंने वेदान्त के साथ तन्त्र के महात्म्य को समन्वित कर पुन: स्थापन किया है। उनके अनुसार तन्त्र और वेदान्त एक दूसरे के पूरक हैं। वेदान्त में निष्क्रिय ब्रह्म की उपासना है तो तन्त्र में सक्रिय ब्रह्म की। आद्या शक्ति को तन्त्र में सक्रिय ब्रह्म के नाम से पुकारा जाता है एवं सारे विश्व को इसकी ही अभिव्यक्ति माना गया है। श्री अरविन्द के सर्वांग योग में चरम तत्त्व के इन दोनों स्वरूपों की उपासना एवं सिद्धि का विधान है। श्री अरविन्द दर्शन में चरम तत्त्व के तीन पक्ष हैं- (1) सत्ता, (2) चेतना और (3) लीला।

इसे ही सच्चिदानन्द की संज्ञा प्रदान की गई है। सम्पूर्ण व्यक्त और अव्यक्त चराचर जगत् के आधार में एक नित्य, निर्गुण, निराकार वस्तु है जिसे सत्ता कहा जा सकता है। वह परात्पर तत्त्व है जो मन, वाणी अनुभवातीत है जिसे कोई नहीं जान सकता। विश्व की सारी अभिव्यक्ति इसी का अंश मात्र है। इसे उपनिषदों में परमब्रह्म कहा गया है।

सत्ता अपने मूल रूप में नित्य है अचल और शून्य है। इसी शून्यता में ही सारी सक्रियता और अनेकत्व निहित है। यह सक्रियता (शक्ति) ही चेतना है। सत्ता चेतना की मूल अवस्था है। इनका अभिन्न सम्बन्ध है। समस्त विश्व, चेतना का रूप है। चेतना की कृति प्रत्येक व्यक्ति एवं वस्तु है। चेतना क्रमश: जड़ → प्राण → मन आदि रूपों में उत्तरोत्तर अभिव्यक्त होती है। विकास के दो पहलू हैं, चेतना का आरोहण एवं अवरोहण, विकास प्रक्रिया ही योग है। निष्क्रिय निर्विकार चरम सत्ता की चेतना के माध्यम से इस विभिन्न अभिव्यक्ति का आधार आनन्द या लीला है। आचार्य शंकर द्वारा प्रतिपादित नानात्वमय जगत् के मिथ्यात्व का खण्डन कर श्री अरविन्द ने मायावाद की जगह लीलावाद का समर्थन किया है। यह लीला रूप जगत् सत्ता में स्थित चेतना द्वारा व्यक्त होता है। वेदान्त में इसी को ब्रह्म और शक्ति कहा गया है। इसे ही शैव दर्शन में शिव और काली कहा गया है। यह दिव्य शक्ति है। यह शक्ति अभिव्यञ्जना के मध्य विभिन्न स्वरूप धारण करती है। अनेकता में ही इसका प्रकाशन सम्भव है। यह तमस् रूप से अचेतन भौतिक क्षेत्र में, रजस् रूप से सचेतन मानसिक क्षेत्र में और सत्वरूप से अतिमानस क्षेत्र में अभिव्यक्त होती है, ये 'सत्वरूप' ही 'दिव्य जीवन' के प्रादुर्भाव के लिए सतत् प्रयासरत है।

संसार की कोई भी घटना या पदार्थ इस शक्ति की लीला होने के कारण निरर्थक नहीं है। जीवन का प्रत्येक स्पन्दन ईश्वरीय आनन्द की ऊर्मि है। अत: जीवन का कोई भी क्षण निरुद्देश्य या अनुपयोगी नहीं है।

भारतीय ऋषियों ने परम सत्ता को आनन्दमय कहकर सम्बोधित किया है। वस्तुत: आनन्द ही विश्व का आदि एवं अन्त है, कारण एवं कार्य है, मूल और फूल है। आनन्द में ही इसकी उत्पत्ति और लय है।

महर्षि अरविन्द के अनुसार जीवन सततप्रवाही झरने के समान है जो कि सदैव पूर्ण होने पर भी आगे बढ़ता ही जाता है एवं मृत्यु जीवन का अन्त न होकर नवजीवन का सन्देश वाहक है।

श्री अरविन्द जीवन के आध्यात्मिक एवं भौतिक पक्षों में विरोध नहीं मानते। वे कहते हैं जीवन का सारा प्रवाह आध्यात्मिक है, भौतिक भी अपने मूल रूप में आध्यात्मिक ही है। जड़त्व में चैतन्य को

ढूँढ़ना, जड़त्व का रूपान्तरण, जगत् का दिव्यीकरण अरविन्द दर्शन की महत्त्वपूर्ण देन हैं।

महर्षि अरविन्द का समन्वयवादी दर्शन सांख्य दर्शन से आगे का चिन्तन प्रस्तुत करता है। वे भौतिक को आध्यात्मिक का विरोधी न मानकर भौतिकता को आध्यात्मिकता की प्राप्ति में सहायक सोपान मानते हैं। उनके अनुसार विश्व की प्रक्रिया दिशाहीन है। इसका लक्ष्य दिव्य जीवन की सिद्धि है। जिसमें जड़ का आध्यात्मिक रूपान्तरण एवं जगत् का दिव्यीकरण होता है। विकास की इस-प्रक्रिया में उच्च स्तर द्वारा निम्न स्तर का निषेध न होकर परिष्कार होता है। जब चैतन्यता अथवा आध्यात्मिकता का जड़ में अवतरण होगा तब ही जड़ का परिष्कार सम्भव है।

संदर्भ सूचीः

1. श्री अरविन्द विचार दर्शन- श्याम बहादुर शर्मा
2. श्री अरविन्द का सर्वांग दर्शन- डॉ. रामनाथ शर्मा
3. अतति सन्ततभावेत जाग्रदादिसर्वास्वस्थासु अनुवत